अध्याय - 1

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय सूचना और प्रसारण मंत्रालय के माध्यम एककों में से एक है जो 207 क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों और 22 प्रादेशिक कार्यालयों के नेटवर्क के साथ सरकार के विभिन्न कार्यक्रमों एवं नीतियों के प्रचार-प्रसार में कार्यरत है ।

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की शुरुआत 1953 में हुई । तब इस निदेशालय के तहत 32 क्षेत्रीय प्रचार इकाइयां और चार प्रादेशिक कार्यालय मोबाइल इकाई के रुप में कार्यरत थे । बाद में इस विभाग का निर्माण संगठित प्रचार कार्यक्रम के तहत किया गया और इसका नाम रखा गया " पंच वर्षीय योजना प्रचार संगठन " । प्रादेशिक कार्यालयों तथा इकाइयों के ऊपर मंत्रालय का सीधा प्रशासनिक नियंत्रण था । तत्पश्चात, 1959 में एक पूर्ण निदेशालय की स्थापना हुई ताकि वह क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों के क्रियाकलापों पर नजर रख सके और इस तरह इस निदेशालय का नाम “क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय” पड़ा ।

1962 में साइनो-भारत युद्ध तथा 1965 में इंडो-पाक युद्ध के बाद राष्ट्र का हौसला बुलन्द करने और किसी भी बाहरी आक्रमण से निपटने के लिए लोगों को मानसिक तौर पर तैयार करना अत्यंत जरुरी समझा गया और इसे दृष्टिगत रखते हुए क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के कार्य एवं पहुंच में कुछ खास परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की गई । तदुनसार 1963 में 34 इकाइयां और 1965 में 33 इकाइयां इस निदेशालय के तहत और खोली गई ताकि सीमावर्ती क्षेत्रों में पूरी तरह से प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया जा सके । वर्तमान में इस निदेशालय के तहत 207 क्षेत्रीय प्रचार इकाइयां हैं जिनमें 72 सीमावर्ती इकाई हैं ।

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की भूमिका तथा इसका उद्देश्य और लक्ष्य

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय एक क्षेत्रोन्मुखी संगठन है और 1953 से समाज के हर वर्ग के लोगों के सक्रिय भागीदारी के साथ भारत को मजबूत और समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है । समाज के विभिन्न वर्गों, विशेष रुप से कमजोर तथा

गरीब लोगों के लाभ के लिए सरकार द्वारा बनायी गयी विभिन्न विकासशील योजनाओं तथा कार्यक्रमों में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करके तथा उनके व्यवहार में परिवर्तन लाकर ऐसा किया जा सका है ।

प्रचार कार्य के लिए उपयुक्त सामग्री और कर्मियों से युक्त क्षेत्रीय प्रचार इकाइयां जो वास्तविक रुप से लोगों के घर तक पहुंचती है और उन्हें अपने प्रयास द्वारा देश के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक तथा सांस्कृतिक वातावरण से परिचित कराती हैं और अधिकांश भारतीयों में अच्छी भावना लाने के लिए संसार के सबसे बड़े प्रजातंत्र के नागरिक के रुप में एक जुट होकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देती है ।

हाल ही में, जबरदस्त तकनीकी प्रगति के कारण संगठन के समक्ष आयी चुनौती ने एक नए आयाम को जन्म दिया जिसने प्रचार संगठन के रुप में क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की भूमिका की व्याख्या करने की आवश्यकता को महसूस कराया । पिछले दो दसकों और इससे ज्यादा के दौरान इलेक्ट्रानिक मीडिया के विस्तार होने से यह प्रायः विश्वास किया जाने लगा है कि क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की भूमिका कम हो गयी है यद्यपि यह विश्वास गलत है । और वास्तव में ऐसा है नहीं । हमारे जैसे देश में अंतर-वैयक्तिक संचार की भूमिका हमेशा महत्वपूर्ण रहेगी क्योंकि देश के कुछ भाग ऐसे हैं जहाँ दूरदर्शन अभी पहुंच नहीं पाया है । पता नहीं गरीबी रेखा के नीचे जी रहे लाखों लोग टी.वी. सेट खरीदने का भार कैसे उठा पायेगे । यदि यह मान भी लिया जाए कि सभी के पास टी.वी. सेट है तो भी इस बात की गारंटी नहीं है कि वे दूरदर्शन द्वारा प्रसारित सूचनाप्रद तथा शिक्षाप्रद कार्यक्रम देखते होंगे । प्रायः लोग मनोरंजनप्रद कार्यक्रम देखना पसन्द करते हैं । सूचनाप्रद तथा शिक्षाप्रद प्रसारित फिल्मों में से अधिकांश ऐसी हैं जिन्हें देखने का मौका ही नहीं मिलता होगा । दूरदर्शन एक तरफा संचार माध्यम है और कोई ऐसा माध्यम/जरिया नहीं है जिससे दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों की प्रतिक्रिया प्राप्त हो सके जैसा कि हमें डी.एफ.पी. के कार्यक्रमों के बारे में प्राप्त होती है । निदेशालय की इकाइयां अपने उपकरणों और सामग्री के साथ लोगों से आमने-सामने मिलती है तथा लोगों के क्षेत्रीय वातावरण को ध्यान में रखकर उनके प्रचार अपेक्षा के अनुसार चुनी हुई फिल्मों के जरिए विभिन्न विषयों के बारे में सूचना देती है । उनके पास विमोहित दर्शक होते है और वे यह देखने की दशा में होते हैं कि दर्शक फिल्म को कैसे देख रहे हैं तथा उनकी प्रतिक्रिया क्या है । निदेशालय की इकाइयां पिछड़े/

आदिवासी क्षेत्रों में भी अहम भूमिका निभाती है जहाँ क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के अतिरिक्त दूसरा कोई माध्यम पहुंचने में संक्षम नहीं हो सकता ।

उद्देश्य और लक्ष्य

निदेशालय के उद्देश्य और लक्ष्य विस्तार पूर्वक नीचे दिये जा रहे हैः-

1. लोगों के आमने सामने अपने कर्मियों और प्रचार सामग्री द्वारा सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों को प्रदर्शित करना तथा उनके लाभ के लिए बनायी गयी योजनाओं के बारे में उन्हें अवगत करना ।

2 प्रजातंत्र, समाजवाद तथा धर्मनिरपेक्षता जैसे मौलिक राष्ट्रीय महत्व के बारे में लोगो को शिक्षित करना तथा लगातार व्यक्तिगत सम्पर्क करके उनके विश्वास को मजबूत करना ।

3. विकासशील कार्यों में लोगों की सक्रिय भागीदारी हेतु निचले स्तर पर लोगों से सम्पर्क स्थापित करना तथा विकासशील और कल्पाणकारी कार्यक्रमों को अमल में लाने के लिए जनमत तैयार करना ।

4. सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों को ग्राम्य स्तर पर लागू कराना तथा उनके संबंध में लोगों की प्रतिक्रिया संकलित करना तथा सरकार द्वारा उस पर उपयुक्त कार्रवाई के लिए उन्हें सूचित करना । इस तरह निदेशालय लोगों तथा सरकार के बीच संचार के दो तरफा माध्यम के रूप में कार्य करता है ।

संगठनात्मक ढांचा

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय का ढांचा सूची-स्तम्भीय हैं । सूची में सबसे उपर महानिदेशक होता है जो मुख्यालय, नई दिल्ली से देश भर में फैले 22 प्रादेशिक कार्यालयों तथा 207 क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों के जरिए हो रहे कार्यों का संचालन व निरीक्षण करता है ।

निदेशालय तीन स्तर पर कार्य करता है - मुख्यालय नई दिल्ली सें, राज्य की राजधानियों तथा महत्वपूर्ण शहरों में स्थित प्रादेशिक कार्यालयों से तथा राज्य की राजधानियों, जिला मुख्यालयों तथा महत्वपूर्ण शहरों में स्थित क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों से ।

प्रशासनिक सुविधा के दृष्टिकोण से कुछ मामलों में कुछ संघ राज्य क्षेत्रों और छोटे राज्यों को एक साथ मिला कर एक क्षेत्र बना दिया गया हैं । जबकि बड़े तथा ज्यादा जनसंख्या वाले राज्यों को दो क्षेत्र में विभाजित करके कार्य किया जा रहा हैं ।

महानिदेशक विभाग के प्रधान होते हैं जो प्रादेशिक कार्यालयों और क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों के संचालन तथा देखरेख अपने नियंत्रण में रखते हैं ।

महानिदेशक के नीचे एक उप महानिदेशक, दो निदेशक, दो उप निदेशक तथा कार्यक्रम, प्रशासन तथा तकनीकी अनुभागों के अन्य अधिकारी तथा कर्मचारी मदद के लिए होते हैं ।

प्रशासन, बजट तथा लेखा के अतिरिक्त निदेशालय सभी प्रकार के कार्य करता हैः- जैसे वैयक्तिक मामले, इकाइयों/जोनों को तितर - वितर करने, सीमांकन करने तथा स्थापित करने हेतु वार्षिक तथा परिप्रेक्ष्य योजना बनाने, संसद प्रश्न, सचिव द्वारा किये गये बैठकों पर फालो--अप कार्रवाई करना, जन शिकायत, अभियान, अंतर माध्यम समन्वय समिति, सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अधीन कार्यरत अन्य माध्यम एककों के साथ सम्पर्क, भारतीय जन संचार के साथ सम्पर्क, सामाजिक परिवर्तन के तहत अनुभवजन्य प्रचार परियोजना तथा जनप्रतिक्रिया, प्रादेशिक अधिकारियों के सम्मेलन पर फालो-अप कार्रवाई, पूर्वदर्शन, फिल्मों तथा अन्य साफ्टवेयर के क्रय और वितरण, वार्ता-विन्दु,, डाटा संकलन तथा प्रतिवेदनों का संग्रह ।

निदेशालय में क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों द्वारा निष्पादित कार्यक्रम के मूल्यांकन एवं निरीक्षण हेतु एक व्यवस्था निर्मित है । महानिदेशक, उप महानिदेशक, निदेशक तथा संयुक्त निदेशक प्रादेशिक कार्यालयों का दौरा करते हैं तथा क्षेत्र में प्रचार कार्यक्रमों के गुणवत्ता का पता लगाने के लिये क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों के कार्यक्रमों में उपस्थित होते हैं तथा समय-समय पर उनका मार्गदर्शन करते हैं ।

निदेशालय के कार्यक्रम, मूल्यांकन, प्रशासन तथा तकनीकी अनुभागों के अधिकिरियों का दल भी कार्यक्रम, प्रशासन तथा तकनीकी मामलों के निरीक्षण करने वास्ते प्रादेशिक कार्यालयों तथा क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों का दौरा करते हैं । निरीक्षण के उपरान्त अधिकारियों द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत किये जाने पर निदेशालय द्वारा प्रादेशिक कार्यालयों तथा क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों को दिशा-निर्देश जारी किए जाते हैं ।

प्रादेशिक कार्यालय

संयुक्त निदेशक (रीजन) अपने क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों के नियंत्रण अधिकारी होते हैं । वे अपनी सभी इकाइयों पर प्रशासनिक तथा वित्तीय नियंत्रण रखते हैं । अपने क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रचार अधिकारियों के दल के नेता के रुप में संयुक्त निदेशक मॉडंल कार्यक्रम का आयोजन करके उनका मार्ग दर्शन करते हैं तथा अपने क्षेत्र में आयोजित किये गये महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में हिस्सा भी लेते हैं । वे प्रत्येक माह दौरा करते हैं तथा चक्रक्रम के आधार पर अपने क्षेत्राधिकार के तहत इकाइयों का भ्रमण करते हैं तथा मुख्यालय को दौरा तथा निरीक्षण से संबंधित अपना रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं । रिपोर्ट में कार्यक्रम निष्पादन, उपकरणों का रखरखाव तथा प्रशासनिक मामलों से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी दी जाती है ।

संयुक्त निदेशकों को प्रशासनिक अधिकारी तथा अन्य समर्थक कर्मचारियों से मदद मिलती है । एक तकनीकी सहायक की सेवा दो रीजनों को दी जाती है और वह उन दोनों रीजनों के तकनीकी उपकरणों के रखरखाव में सेवा तथा सहायता मुहैया कराता है । बजट और लेखा का विकेन्द्रीकरण हो जाने के उपरान्त संयुक्त निदेशकों की वित्तीय एवं प्रशासनिक नियंत्रण की जिम्मेदारी बढ गयी है और प्रशासनिक अधिकारी को इस जिम्मेदारी में हाथ बटाना पड़ता है ।

क्षेत्रीय प्रचार इकाइयां

तीसरे स्तर पर क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी आते हैं जिन्हें निदेशालय/प्रादेशिक कार्यालयों से प्राप्त निर्देशों के अनुसार स्थानीय अधिकारियों तथा गैर-सरकारी एजेन्सियों की सहायता से प्रचार कार्यक्रमों का आयोजन करना होता है ।

क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी निदेशालय तथा प्रादेशिक कार्यालय के प्रतिनिधि के रूप में अपने इकाई में कार्यरत कर्मचारियों पर प्रशासनिक नियंत्रण रखते हैं ।

क्षेत्रीय प्रचार इकाई - उनके कार्य और उद्देश्य

207 क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों के इस बड़े समूह पर निदेशालय का सूची-स्तम्भीय ढांचा खड़ा है । निचले स्तर पर कार्य कर रहे उपयुक्त मीडिया, जो दो-तरफा संचार माध्यम के रुप में कार्यरत हो तथा जिसके इस्तेमाल करने का वास्तव में पूरा लाभ मिलता हो, के जरिए संदेशों को प्रसारित करने की जिम्मेदारी उनके कंधो पर जाती है । कार्य करने में निहित चुनौतियों का उन्हें हिम्मत, कौशल तथा दृढ़ता से सामना करना पड़ता है । वास्तव में वे सरकार तथा जनता के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रुप में कार्य करते है ।

साफ तौर पर वे राष्ट्रीय विषयों को चुनते हैं, सीमावर्ती क्षेत्रों में उनकी भूमिका का जबरदस्त महत्व होता है । वहाँ वे पूरी कोशिश से भारत के विरुद्ध प्रचार का जवाब देते हैं तथा समूचे देश के लोगों में एकता के साथ रक्षा की तैयारी तथा देशभक्ति की भावना जगाने का प्रयास करते हैं ।

आदिवासी क्षेत्रों में स्थित क्षेत्रीय प्रचार कार्यालयों की यह विशेष जिम्मेदारी होती है कि वे आदिवासी जनसंख्या वाले लोगों के साथ मिल-जुल कर प्रेम पूर्वक रहें । उन्हें उनकी संस्कृति और मान्यताओं के लिए आदर और विश्वास का माहौल बनाना पड़ता है ।

क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी की सफलता उनके लक्ष्य, कार्यक्रम की रुप-रेखा तथा प्रभावशाली क्रियान्वयन की उनकी स्पष्ट सोच के साथ-साथ लगातार मूल्यांकन और संशोधन पर निर्भर करता है ।

क्षेत्र और लोगों को जानें - जिला डायरी तैयार करना

अपने क्षेत्र में सफलता पूर्वक कार्य करने के लिए पहली आवश्यकता अपने क्षेत्र तथा वहाँ के लोगों को अच्छी तरह जानने की होती है । हमें जानना चाहिए - उनके रंग-ढंग और रुप-रेखा, भाषा और बोली, सामाजिक-आर्थिक दशा, भौगोलिक तथा

सांस्कृतिक गठन तथा पारंपरिक प्रभाव । वास्तव में, क्षेत्र का सम्पूर्ण फाइल तैयार करना ही जिला डायरी कहलाती है और इसे सबसे पहले पूरा किया जाना चाहिए । इससे न केवल कार्यक्रमों की रुपरेखा तैयार करने में मदद मिलती है बल्कि लोगों के साथ क्षेत्रीय कर्मचारियों का परिचय कराने और उनके साथ अच्छे संबंध बनाने में भी मदद मिलती है ।